प्रिय प्राध्यापक, शिक्षाविद् एवं शोधार्थी

आप सबों को जोहार!

संत जेवियर्स कालेज रांची, आदिवासी शोध केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लेने - आलेख प्रस्तुत करने लिए आप आमन्त्रित हैं। इसका विषय- "आधुनिक समाज में आदिवासी ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता"

भारत में आदिवासियों की जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का 8.6% है। प्राचीन काल से ही देश के विभिन्न भागों में विशेषकर पर्वतीय और जंगल से आच्छादित प्रदेशों में आदिवासी लोग निवास करते आये हैं। हमेशा से आदिवासी समूह प्रकृति प्रेमी रहा है। प्रकृति को ये मां सदृश मानते हैं, जिनके बिना उनका जीवन अधूरा है। जल, जंगल, जमीन, नदी, नाले, पशु-पक्षी उनके जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन की विभिन्न घटनाएं प्रकृति से ही जुड़ी हुई है। आदिवासियों की सामाजिक संरचना सामूहिक और सहभागिता पर आधारित है। भारत में पायी जाने वाली विभिन्न आदिवासी जातियाँ अपनी विशिष्ट संस्कृति, रीति -रिवाज, परम्परा और अपने ज्ञान दर्शन के लिए जानी जाती है। आधुनिकता के दौर मे शिक्षा, संचार माध्यमों तथा विकास के व्यापक प्रभाव के चलते आदिवासियों का जीवन बहुत हद तक मुख्य धारा के सम्पर्क में आ चुका है। आज बुनियादी सुविधाओं जैसे बिजली, पानी और फोन का नेटवर्क सुदूर गाँवों में भी पहुँच चुका है। नई शिक्षा नीति 2020 आने के बाद यह दायरा और भी विस्तृत हुआ है तथा कार्य में प्रगति हुई है। इस शिक्षा नीति में जनजातीय ज्ञान को भी महत्त्व दिया गया है तथा आदिवासी भाषाओं में शिक्षण का भी प्रावधान किया गया है। आदिवासी समाज में अपनी अलग तरह की शिक्षा व्यवस्था थी तथा एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में संचित ज्ञान को हस्तांतरित भी किया जाता रहा है। आदिवासियों को भी बहुत सारी चीजों की गहरी जानकारी थी। आज उन्हें प्रकाश में लाने की जरूरत है।

निम्नलिखित शीर्षकों से आप हमें शोध - आलेख भेज सकते हैं :----

1. शिक्षा का जनजातीय दृष्टिकोण

2. आदिवासी ज्ञान प्रणाली

3. शिक्षा के क्षेत्र में आदिवासियों का योगदान

4. आदिवासी भाषाओं में शिक्षा

5.आदिवासी गीतों की साहित्यिक समृद्धि

6. आदिवासियों की नैतिक धारणा

7. आदिवासी जीवन दर्शन की प्रासंगिकता

8. शिक्षा के क्षेत्र में आदिवासियों की वर्तमान स्थिति

9. आदिवासी भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन

10. आदिवासियों में शिक्षा और रोजगार

11. नई शिक्षा-नीति और आदिवासी भाषाएँ

12. आदिवासी भाषा एवं साहित्य का इतिहास

13. आदिवासी भाषा एवं साहित्य की प्रासंगिकता

14. आधुनिक समाज में आदिवासी भाषा एवं साहित्य की दशा और दिशा

15. झारखण्डी साहित्य में आदिवासियों का जीवन दर्शन

संगोष्ठी के प्रतिभागी

1. पांच आदिवासी भाषा- साहित्य जैसे - संताल, हो, मुण्डा, खडिया एवं उराँव के जानकर एवं संबंधित आदिवासी विषयों के शोधकर्ता, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता।

2. विभिन्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में आदिवासी भाषा का अध्ययन करने वाले विधार्थी।

3. उपरोक्त पांच भाषाओं में आदिवासी शोध केन्द्र द्वारा प्रकाशित रचनाओं के पाठक।

शोध आलेख आमंत्रण

1. लेखकों से आग्रह है कि वे अपना शोध सार अपनी भाषा या हिन्दी में 22 मार्च 2025 तक भेजें।

2. अपना पूर्ण आलेख या शोध आलेख 25/03/2025 तक भेजें।

3. लेखक 2500 -3000 शब्दों में अपना शोध - आलेख क्रुति देव 010 में टाइप कर भेजें।

4. संदर्भ ग्रंथ- सूची APA शैली में होना चाहिए।

पंजीयन के लिए निम्नलिखित लिंक का प्रयोग करें ।

Email : trcsxc1@gmail.com

Registration Link Google Form

https://forms.gle/HvkHBBLJAmdUzbHx8